"शिक्षण एवं अधिगम
Teaching and Learning"

शिक्षण क्या है ?

शिक्षण का अर्थ = शिक्षण शब्द अंग्रेजी (आंग्ल) भाषा के Teaching शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है।

शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षण पर प्रत्येक देश की शासन प्रणाली, सामाजिक दर्शन, सांपरिस्थितियों तथा मूल्यों का प्रभाव पड़ता है। है जहां जैसी शासन प्रणाली या परिस्थिति होगी वहां का शिक्षण वैसा होगा।

शिक्षण के अर्थ का तीन भागों में बांटा गया है।

विभिन्न दार्शनिकों ने शिक्षण को तीन भागों में बांटा है।

1 — एकतंत्र में शिक्षण का अर्थ — Autocracy teaching

2 — लोकतन्त्र में शिक्षण का अर्थ। Democracy teaching

3 — हस्तक्षेप रहित शासन में शिक्षण का अर्थ (Laissez-Faire Teaching)

(1) एकतन्त्र शिक्षण

अर्थ = एकतंत्र शासन में तानाशाही की (One way Teaching) इच्छा प्रमुख होती है।

① एक तन्त्र शिक्षण (Laissez-Faire Teaching)

अर्थ = एक तंत्र शासन में तानाशाही की (One way Teaching) इच्छा प्रमुख होती है।

इस शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान प्रमुख होता है अर्थात यह शिक्षक प्रधान (Teacher Dominated) Teacher Centered होता है।

इसमें शिक्षक का स्थान प्रमुख व छात्र का स्थान गौण (Secondary) होता है इसमें शिक्षक कथन आदेश माना जाता है तथा एक अधन आदेश विचारों को बलपूर्वक छात्रों में ठूसता है अपना रोब दाब के द्वारा करता है इस शिक्षण में छात्र स्वतन्त्र नहीं होते हैं तथा वह तर्क नहीं कर सकते।

इसमें शिक्षक सक्रिय होता है तथा छात्र निष्क्रिय होता है।

इसमें छात्रों की क्षमताओं के विकास के लिये अवसर नहीं दिये जाते। इसे एक तन्त्रीय शिक्षण कहते हैं।

② लोकतन्त्र शिक्षण :—

अर्थ =

लोकतन्त्र शासन प्रणाली में मानवीय सम्बन्धों पर आधारित रहती है तथा सामान्य जनता की इच्छा सर्वोत्तम मानी जाती है।

इस प्रकार की प्रणाली में (छात्र) शिक्षक स्थान गौण व छात्रों का स्थान प्रमुख होता है। यहां शिक्षक व छात्र दोनों सक्रिय होते हैं अर्थात वे तर्क, प्रश्न, उत्तर पाते तथा अन्य प्रकार की वार्तालाप कर सकते हैं इसमें शिक्षक व छात्र के बीच शाब्दिक व अशाब्दिक अन्तःक्रिया चलती है।

इसमें छात्र व शिक्षक परस्पर एक दूसरे को सम्मान देते हैं।

③ हस्तक्षेप शिक्षण

अर्थ = इस प्रकार के शिक्षण में शिक्षण एक मित्र (सहायक) के (पथ प्रदर्शक) इसमें अधिक अवसर छात्रों को

हस्तक्षेप रहित शासन में शिक्षण का अर्थ

को देता है इसमें छात्र अधिक सक्रिय होते हैं इसमें छात्र केवल उनकी समस्याओं को सुलझाने में मदद करता है वह उनकी सृजनात्मक क्षमताओं का विकास करता है। इसमें शिक्षक का कार्य केवल फैसिलिटेटर (Facilitator) का होता है।

क्लार्क के अनुसार = "एक शिक्षण ऐसी प्रक्रिया है जिसमें प्रारूप, तथा परिस्थिति की व्यवस्था इस प्रकार से की जाती है जिससे छात्रों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाया जा सके।"

निष्कर्ष : उपरोक्त शिक्षण के प्रकारों से ज्ञात होता है कि शिक्षण की प्रक्रिया एक सामाजिक प्रक्रिया है। इसमें अन्तःक्रिया का होना आवश्यक है। तथा शिक्षण एक कलात्मक विज्ञान दोनों है। शिक्षण के तीन ध्रुव हैं शिक्षार्थी, छात्र, पाठ्यक्रम या तीनों के आधार पर शिक्षण की विभिन्न परिभाषाओं ने विभिन्न भावों में बाँटा है जो उपरोक्त हैं इसलिए हम कह सकते हैं कि शिक्षण एक शिक्षक व छात्र के बीच होने वाली अन्तःक्रिया द्वारा घटित होने वाली प्रक्रिया है।

Scanned with CamScanner

है ... पूरा ... जाने वाली प्रक्रिया

शिक्षण का परिचय (विषय-प्रवेश)

Introduction of Teaching

प्राय: (सामान्य) यह समझा जाता है कि बालक (छात्र) को विभिन्न विषयों का ज्ञान प्रदान करना ही शिक्षण है, परन्तु यह कहना पूरी तरह से ठीक नहीं है इसलिए एक मनोवैज्ञानिक/दार्शनिक ने लिखा है कि —

जोसफ लैण्डन के अनुसार — "ज्ञान प्रदान करने की अपेक्षा शिक्षण कहीं अधिक है" अब प्रश्न यह उठता है कि शिक्षण क्या है? —

कुछ लोग कहते हैं कि — "शिक्षण एक प्रक्रिया है जिसमें एक निश्चित योजना के अनुसार निश्चित अवधि तक किसी निश्चित स्थान पर व्यक्ति को ज्ञान प्रदान किया जाता है"

अन्य लोगों का कहना ⇒ "व्यक्ति का अपने परिवार के साथ, विद्यालय के साथ, मित्र मण्डली के साथ, व्यवसाय के साथ, सामाजिक जीवन के साथ और सम्पूर्ण वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करना ही शिक्षण है"

Scanned with CamScanner

शिक्षण की प्रकृति व विशेषताएं

उपरोक्त विषय प्रवेश व अर्थों से स्पष्ट करते है या होता है कि शिक्षण का स्वरूप / संरचना / प्रकृति व विशेषताएं निम्नलिखित है —

1 — शिक्षण सीखने का संगठन है — 'शिक्षण सीखने का संगठन कहा जा सकता है' जेम्स Murs...

2 — शिक्षण संवेगों का प्रशिक्षण है — बालक को स्थायी संवेगात्मक जीवन के विकास में सहायता देना शिक्षण...

3 — शिक्षण प्रेरणा देता है — 'बालक का किसी विषय में रुचि उत्पन्न करना'

4 — शिक्षण निर्देशन या पथ प्रदर्शन है — शिक्षण को सीखने का मार्गदर्शन या निर्देशन कहा जा सकता...

5 — शिक्षण सम्बन्ध स्थापित करता है। (शिक्षक व छात्र में सम्बन्ध, शिक्षक व विषय में सम्बन्ध)

6 — शिक्षण सूचना देता है — छात्र को विभिन्न विषयों की जानकारी देना

7 — शिक्षण सिखाता है। तब तक कुछ पढ़ाया नहीं गया, जब तक कुछ सीखा नहीं गया है। Hughes ह्यूजेज, ह्यूजेज

8 — शिक्षण वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने में सहायता देता है।

9 — शिक्षण एक साधन है

10 — शिक्षण तैयारी का साधन है —

11 — शिक्षण क्रियाशीलता के लिए अवसर प्रदान करता है। — प्रत्येक छात्र में क्रियाशीलता की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है

... व कला दोनों है — दोनों है

शिक्षण की प्रकृति व विशेषताएं

उपरोक्त विषय प्रवेश व अर्थों से स्पष्ट करते है या होता है कि शिक्षण का स्वरूप / संरचना / प्रकृति व विशेषताएं निम्नलिखित है —

1 — शिक्षण सीखने का संगठन है — शिक्षण सीखने का संगठन कहा जा सकता है, जेम्स Murssell
2 — शिक्षण संवेगों का प्रशिक्षण है — बालक को स्थायी संवेगात्मक जीवन के विकास मे सहायता देना शिक्षण
3 — शिक्षण प्रेरणा देता है — बालक को किसी विषय मे रुचि उत्पन्न करना।
4 — शिक्षण निर्देशन या पथ-प्रदर्शन है — शिक्षण को सीखने का मार्गदर्शन या निर्देशन कहा जा सकता
5 — शिक्षण सम्बन्ध स्थापित करता है। (शिक्षक व छात्र मे सम्बन्ध, शिक्षक व विषय मे सम्बन्ध)
6 — शिक्षण सूचना देता है — छात्र को विभिन्न विषयों व जानकारी देना
7 — शिक्षण सिखाता है। तब तक कुछ पढ़ाया नहीं गया, जब तक कुछ सीखा नहीं गया है (Hughes & Hughes ह्यूजेज, ह्यूजेज)
8 — शिक्षण वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने मे सहायता देता है।
9 — शिक्षण एक साधन है
10 — शिक्षण तैयारी का साधन है —
11 — शिक्षण क्रियाशीलता के लिए अवसर प्रदान करता है। — प्रत्येक छात्र मे क्रियाशीलता की जन्मजात प्रवृति होती है
12 — शिक्षण विज्ञान व कला दोनो है — दोनो है
13 — शिक्षण एक प्रक्रिया है। —
14 — शिक्षण के दो प्रमुख अंग है — (1) सीखने वाला (2) सिखाने वाला
15 — शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाता है।
16 — शिक्षण की समस्त क्रियाओं का आधार मनोविज्ञान है।
17 — शिक्षण व अधिगम मे सकारात्मक सम्बन्ध है।
18 — शिक्षण का कार्य ज्ञान प्रदान करना है
19 — शिक्षण छात्रों मे उत्सुकता जागृत करता है
20 — शिक्षण एक कौशल युक्त क्रिया है।
21 — शिक्षण मे सांकेतिक, क्रियात्मक व शाब्दिक व्यवहार निहित रहते है।